

गृह वाटिका का महत्व एवं प्रबंधन

(डॉ. प्रियंका कटारा एवं डॉ. डी सी मीणा)

1विषय वस्तु विशेषज्ञ (हॉर्टिकल्चर), कृषि विज्ञान केंद्र, फलोदी (जोधपुर-II) - 342301

2सहायक प्रोफेसर (हॉर्टिकल्चर), सुरेश ज्ञान विहार युनिवर्सिटी, जयपुर - 302017

3संवादी लेखक का ईमेल पता: priyankakatarata94@gmail.com

गृहवाटिका में सब्जी उत्पादन का प्रचलन प्राचीनकाल से चला आ रहा है। इसमें सब्जी उत्पादन का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि पूरे परिवार को सालभर ताजा सब्जी मिलती रहे। पोषक एवं औषधीय गुणों के कारण हमारे दैनिक जीवन में ताजी एवं हरी सब्जियों का अत्यधिक महत्व है। इनके नियमित सेवन से शरीर के लिए प्रचुर मात्रा में आवश्यक खनीज तत्व एवं विटामिन्स के साथ अन्य जरूरी पोष्टिक तत्व भी सुगमता से प्राप्त होते हैं।



पोषण जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रति व्यक्ति प्रति दिन 300 ग्राम सब्जियों की आवश्यकता पड़ती है। इनमें 125 ग्राम पत्तेदार सब्जियां, 100 ग्राम कंदमूल एवं 75 ग्राम अन्य सब्जियां सम्मिलित हैं।

गृह वाटिका के लाभ

1. गृह वाटिका से प्राप्त सब्जियां रसोई का खर्च तो कम तो करती ही है, साथ ही समय का उपयोग भी हो जाता है।
2. परिवार की आवश्यकतानुसार ताजी व स्वादिष्ट सब्जियां सालभर उपलब्ध होती रहती है।
3. पांच सदस्यों वाले एक परिवार की दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए लगभग 100-125 वर्ग मीटर स्थान पर्याप्त होता है।
4. घर के आसपास खाली पड़ी भूमि का सदुपयोग हो जाता है।
5. किचन गार्डन में रचनात्मक कार्य करने का अवसर मिल जाता है, जिससे थकान मिट जाती है तथा स्फूर्ति एवं ताजगी का अनुभव होता है।
6. सब्जियों के साथ साथ फूल और फल भी लगा सकते हैं, जिससे फूल और फलों की प्राप्ति भी होती है।
7. घर के पानी और कचरे का सदुपयोग हो जाता है, कचरे से हम खाद तैयार करके इस्तेमाल कर सकते हैं।
8. इसमें उगाई गई सब्जियों में कीटनाशक दवाओं का प्रभाव नहीं रहता।
9. बाजार की तुलना में सस्ती एवं अधिक गुणवत्ता वाली सब्जियां मिलती है।
10. यह एक अच्छा मनभावन शौक है।

गृहवाटिका के लिये उचित स्थान

गृहवाटिका का स्थान घर के निकट होना चाहिए, घर के आगे या पिछवाड़े की पहुँच से दूर व पूर्णतया खुला एवं सूर्य के प्रकाश की पर्याप्त पहुँच वाले स्थान का चयन करना चाहिए, गृह वाटिका के लिए दोमट मिट्टी जिसमें जीवाणुओं की अच्छी मात्रा हो, उपयुक्त रहती है। सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता भी होनी चाहिए।

सब्जियां बोने का समय

शाक सब्जियों को गृहवाटिका में वर्ष में तीन बार बोया जाता है।

वर्ष	बुवाई का समय	सब्जियां
1. खरीफ की सब्जियां	जून –जुलाई	टमाटर, मिर्च, बैंगन, भिण्डी, ग्वार, लोबिया, अरबी, करेला, लोकी, तोरई आदि
2. रबी की सब्जियां	सितम्बर–अक्टूबर	फूलगोभी, पत्तागोभी, गांठगोभी, मूली, गाजर, शलजम, बैंगन, टमाटर, सरसों, आलू, मटर, प्याज, लहसुन, पालक, मेथी आदि
3. जायद की सब्जियां	फरवरी–मार्च	टिण्डा, ककड़ी, खीरा, तरबुज, खरबूजा, लोकी, तोरई, भिण्डी, अरबी आदि

गृहवाटिका के लिए क्यारी की तैयारी

बीज बुवाई/पौध रोपण से 2–3 सप्ताह पहले क्यारियों की मृदा की अच्छी प्रकार से खुदाई कर घास-फूस को निकालकर बाहर कर लेना चाहिए। मिट्टी के ढेलो को तोड़कर भुरभुरा कर लेना चाहिए। इसमें बीज डालने/पौध रोपण से पहले बढ़िया क्यारी तैयार हो सकेगी। बुआई योग्य क्यारियों को तैयार करने के बाद इनमें सड़ी गोबर की खाद मृदा में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए।

**खाद एवं उर्वरक प्रबंधन**

बुआई से पहले क्यारियों में खाद एवं उर्वरकों को एक समान छिड़ककर मृदा में अच्छी तरह से मिला दें। गृहवाटिका में रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से बचे। क्यारियों में प्रचुर मात्रा में गोबर की सड़ी खाद/वर्मीकम्पोस्ट व जैव उर्वरकों जैसे— ट्राइकोडर्मा (40–50 ग्राम प्रति वर्गमीटर), स्फूडोमोनास (10–12 ग्राम प्रति वर्गमीटर) व एस्परजिलस (2–3 ग्राम प्रति वर्गमीटर) का प्रयोग करना लाभदायक है।

सिंचाई

पौधों की आवश्यकतानुसार ही सिंचाई करनी चाहिए। सामान्यतः गर्मियों में एक सप्ताह और सर्दियों में 10–15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। गृहवाटिका में स्प्रिंकलर सिंचाई एवं बूंद-बूंद सिंचाई करने पर पानी की बचत के साथ-साथ पौधों की वृद्धि एवं विकास तेजी से होता है। वर्षाकाल में उचित जल निकास का भी ध्यान रखना चाहिए।

पौधशाला प्रबंधन

कुछ सब्जियों जैसे टमाटर, बैंगन, फूलगोभी, पत्तागोभी, गांठगोभी, हरी मिर्च, शिमला मिर्च, प्याज आदि के लिए अच्छी तरह से पौधशाला तैयार करने के लिए उठी हुई क्यारियों में शोधित बीज बोने चाहिए, पौध तैयार करने के लिए बीजों की 1.0–1.5 से.मी. गहराई एवं 7–8 से.मी. की आपसी दूरी पर कतारों में बुआई करनी चाहिए। बुआई के तुरंत बाद नर्सरी को हल्के पुआल से ढक देना चाहिए एवं फव्वारा विधि से सिंचाई करनी चाहिए। ढकने से बीज के अंकुरों की तेज धूप, वर्षा एवं सर्दी से रक्षा होती है। अंकुरण के तुरंत बाद पुआल को हटा देना चाहिए। बीज बुआई के 21–25 दिनों बाद पौधे रोपण के लिए तैयार हो जाते हैं। अगर पौधे खुद ना उगा पाए तो किसी सरकारी पौधशाला से पौधे खरीद भी सकते हैं।

गृहवाटिका में रोपाई करना

जिन सब्जियों की हम पौधशाला में पौध तैयार करते हैं, जैसे : टमाटर, बैंगन, फूलगोभी, पत्तागोभी, मिर्च और प्याज आदि की रोपाई करने के लिए पहले क्यारियां तैयार कर लेनी चाहिए। इसके लिए पहले बताई गई विधि के अनुसार तैयार कर लेना चाहिए। इसके 1–2 दिन बाद पौधों की रोपाई करनी चाहिए। रोपाई करने के लिए 15–20 से. मी. ऊंची व 1.25 मीटर चौड़ी तथा आवश्यकतानुसार लम्बी क्यारियां बना ली जाती हैं। दो क्यारियों के बीच 30 से.मी. चौड़ी नाली छोड़ देते हैं। जिससे कि निराई-गुड़ाईव पानी की निकासी में आसानी रहती है। पौधों को शाम के समय रोपना चाहिए तथा रोपने के बाद हल्की सिंचाई देनी चाहिए।

तुड़ाई

सब्जियों की अच्छी तरह बढ़ववार हो जाने पर उपयुक्त अवस्था एवं उचित समय पर ही तुड़ाई/कटाई सावधानीपूर्वक तेज धारदार चाकु से करनी चाहिए। इससे पौधों को अतिरिक्त नुकसान नहीं पहुँचता है। पैदावार भी ज्यादा मिलती है और उनका स्वाद भी बढ़िया होता है। सब्जियों की तुड़ाई/कटाई सुबह या सांयकाल ही करनी चाहिए।

फसलचक्र

गृहवाटिका में निम्नलिखित फसलचक्र सुगमता से अपनाए जा सकते हैं:

1. टमाटर – करेला – फूलगोभी
2. बैंगन – हरी मटर – पालक
3. भिंडी – लहसुन
4. बैंगन – सब्जीमटर – मेथी
5. मिर्च – मूली – पत्ती वाली सब्जियां
6. लोबिया – आलू
7. शलजम – प्याज – करेला
8. चिकनी तोरई – भिंडी – मूली
9. लौकी – खीरा – मूली
10. करेला – चिकनी तोरई – मूली
11. खीरा – लोकी – शलजम
12. प्याज – भिंडी – शलजम

रोगों एवं कीटों का प्रबंधन

हानिकारक कीटों एवं रोगों के आक्रमण को रोकने के लिए उचित नियंत्रण विधि अपनानी चाहिए तथा सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बहुत से रोगों एवं कीटों की उत्पत्ति को उचित फसलचक्र अपनाकर, क्यारी की साफ-सफाई रखकर एवं ठीक प्रकार से जमीन तैयार करके कम किया जा सकता है। ओजपूर्ण बीजों का प्रयोग करें तथा फफूंदीनाशी से उपचारित बीज ही बोये। रोगनाशकों एवं वानस्पतिक कीटनाशकों (निम्बीसिडीन, नीम का तेल) का प्रयोग करना चाहिए। सूत्रकृमि से बचाव के लिए क्यारियों में बदल-बदल कर गँदे के फूल लगाने चाहिए। दीमक के नियंत्रण के लिए हैप्टाक्लोर की 5 प्रतिशत धूल का प्रयोग करना चाहिए। रोगग्रस्त एवं कीटग्रस्त पौधों (कीट के अंडे, इल्ली आदि के साथ रोगग्रस्त पत्ती, फल एवं शाखाएं आदि) को चुनकर नष्ट करें।